IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर वातावरण का अध्ययन

डॉ. लोकेन्द्र कुमार

सार

विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। सकारात्मक, सुरक्षित एवं सहयोगात्मक वातावरण न केवल विद्यार्थियों की शैक्षणिक रुचि को बढ़ाता है, बल्कि उनके संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा भावनात्मक विकास में भी सहायक होता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण के विभिन्न आयामोंकृभौतिक, सामाजिक एवं शैक्षणिककृके प्रभाव का अध्ययन करना है। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्षों के आधार पर सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए यही वातावरण उनके शैक्षिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास का आधार बनता है। विद्यालय के वातावरण में शिक्षक–छात्र संबंध, सहपाठियों का प्रभाव, शैक्षिक संसाधन और प्रशासनिक नीतियां शामिल हैं। ये तत्व छात्रों की सीखने की क्षमता और उनकी शैक्षिक उपलब्धियों को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। शिक्षक और छात्रों के बीच का संबंध शैक्षिक उपलब्धियों में केंद्रीय भूमिका निभाता है। एक प्रेरक और सहायक शिक्षक छात्रों में पढ़ाई के प्रति आत्मविश्वास और रुचि पैदा कर सकता है। इसके विपरीत, शिक्षकों का कठोर या उपेक्षापूर्ण रवैया छात्रों के प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है।

मुख्य शब्द– विद्यालयी वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के विकास की आधारशिला होती है। विद्यालय वह संस्था है जहाँ विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव होता है। माध्यमिक स्तर शिक्षा का एक ऐसा चरण है जहाँ विद्यार्थी भविष्य की दिशा तय करते हैं। इस स्तर पर विद्यालयी वातावरणकृजैसे कक्षा का वातावरण, शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, सहपाठी सहयोग, विद्यालयीय सुविधाएँकृविद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह उस वातावरण से भी प्रभावित होती है जिसमें विद्यार्थी अध्ययन करता है। विद्यालयी वातावरण में विद्यालय की भौतिक संरचना, कक्षा का वातावरण, शिक्षकदृविद्यार्थी संबंध, सहपाठी संबंध, अनुशासन, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ तथा प्रशासनिक व्यवस्था सम्मिलित होती हैं। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता, रुचि एवं उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है। विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है खासकर

माध्यमिक स्तर पर। यह वातावरण न केवल शैक्षिक सामग्री का संचरण करता है बल्कि छात्रों की मानसिक, शारीरिक और सामाजिक माहौल तथा सहायक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करती हैं। शिक्षक विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में एक केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। एक सक्षम और प्रेरक शिक्षक न केवल पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। बल्कि छात्रों के साथ एक अच्छा संवाद स्थापित करता है। जिससे विद्यार्थियों को उनकी समस्याओं का समाधान मिल सकता है। शिक्षक की सकारात्मक प्रतिक्रिया। विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना और उनके साथ संवाद स्थापित करने की क्षमता छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाती है। इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार होता है। इसके अलावा शिक्षक की शिक्षण शैली, जैसे कि प्रोजेक्ट पर आधारित लर्निंग समूह कार्य और रचनात्मक शिक्षण विधियाँ छात्रों के अध्ययन को अधिक आकर्षक और व्यावहारिक बना सकती हैं जिससे उनका शैक्षिक प्रदर्शन सुधरता है। विद्यालय का भौतिक वातावरण भी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। एक स्वच्छ सुरक्षित और आरामदायक वातावरण छात्रों को अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद करता हैं। विद्यालय की संरचना जैसे कि पुस्तकालय, खेल का मैदान और प्रयोगशाला छात्रों को विविध प्रकार के शैक्षिक अनुभवों से जोड़ती है जो उनके समग्र विकास में सहायक होते हैं। इसके अलावा यदि विद्यालय में पर्याप्त प्रकाश वेंटिलेशन और आरामदायक बैठने की व्यवस्था होती है। तो इससे छात्रों को मानसिक दबाब कम होता है जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियों में वृद्धि होती है। सामाजिक वातावरण का भी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा असर पड़ता है। यदि विद्यालय में एक सकारात्मक और सहायक सामाजिक माहौल होता है तो इससे छात्रों को अपनी व्यक्तिगत समस्याओं से निपटने में मदद मिलती है। साथ ही विद्यार्थियों में आत्म–प्रेरणा और एक दूसरे के प्रति सहानुभूति का विकास होता है। जब छात्र अपने सहपाठियों और शिक्षकों से उत्साहवर्धन प्राप्त करते हैं तो उनका शैक्षिक प्रदर्शन बेहतर होता है। विद्यालयी वातावरण में सहायक गतिविधियाँ और अतिरिक्त पाठ्यक्रम की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। खेल कला संगीत नृत्य और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी से विद्यार्थियों का मानसिक विकास होता है और वे अपनी शैक्षिक गतिविधियों में अधिक समर्पित रहते है। अतिरिक्त पाठ्यक्रमों द्वारा छात्रों को तनावमुक्त किया जाता है जो उनकी पढ़ाई में सुधार करने में मदद करता है।

इसके अलावा समूह कार्य और सहपाठी के साथ सहयोग करने से छात्रों में टीम वर्क और नेतृत्व क्षमता का विकास होता है जो उनके शैक्षिक प्रदर्शन को भी प्रभावित करता है। विद्यालयी वातावरण केवल विद्यालय तक सीमित नही रहता। माता–पिता और समुदाय का भी इसमें बड़ा योगदान होता है। माता–पिता की सक्रिय भागीदारी जैसे कि शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेना बच्चों के अध्ययन की स्थिति पर निगरानी रखना और उन्हें मानसिक सहारा देना विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को बढ़ावा देता है। यदि माता–पिता का सहयोग मिलता है तो बच्चे अपने स्कूल के प्रति अधिक प्रेरित और जिम्मेदार होते हैं। साथ ही समाज का सहयोग और प्रेरणा भी विद्यार्थियों को अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। विद्यालय की नीतियाँ और प्रशासनिक संरचना भी शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव डालती हैं। एक प्रभावी और संगठित विद्यालय प्रशासन विद्यार्थियों के लिए एक स्थिर और उत्तेजक वातावरण सुनिश्चित करता है। विद्यालय की नीति, जैसे कि समय प्रबंधन पाठ्यक्रम का चयन और परीक्षा प्रणाली छात्रों के मानसिक और शारीरिक विकास के लिए उपयुक्त होनी चाहिए। यदि विद्यालय प्रशासन विद्यार्थियों के लिए अच्छे शैक्षिक संसाधन और सुविधाएँ प्रदान करता है तो विद्यार्थियों के प्रदर्शन में सुधार होता है। विद्यालयी वातावरण में मानसिक स्वास्थ्य और समग्र विकास की दिशा में प्रयास किए जाने चाहिए। जब छात्रों को मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएँ मिलती हैं तो वे बेहतर तरीके से अपनी शैक्षिक गतिविधियों में भाग ले पाते हैं।

मानसिक दबाव तनाव और चिंता को कम करने के लिए विद्यालयों में काउंसलिंग सेवाएँ और मानसिक स्वास्थ्य कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए। इसके अलावा विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए नेतृत्व विकास, आत्मविश्वास निर्माण और जीवन कौशल सिखाने वाले कार्यक्रम भी महत्वपूर्ण हैं। विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। सकारात्मक, सुरक्षित एवं सहयोगात्मक वातावरण न केवल विद्यार्थियों की शैक्षणिक रुचि को बढ़ाता है, बल्कि उनके संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा भावनात्मक विकास में भी सहायक होता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण के विभिन्न आयामोंकृभौतिक, सामाजिक एवं शैक्षणिककृके प्रभाव का अध्ययन करना है। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्षों के आधार पर सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए यही वातावरण उनके शैक्षिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास का आधार बनता है। विद्यालय के वातावरण में शिक्षक–छात्र संबंध, सहपाठियों का प्रभाव, शैक्षिक संसाधन और प्रशासनिक नीतियां शामिल हैं। ये तत्व छात्रों की सीखने की क्षमता और उनकी शैक्षिक उपलब्धियों को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। शिक्षक और छात्रों के बीच का संबंध शैक्षिक उपलब्धियों में केंद्रीय भूमिका निभाता है। एक प्रेरक और सहायक शिक्षक छात्रों में पढ़ाई के प्रति आत्मविश्वास और रुचि पैदा कर सकता है। इसके विपरीत, शिक्षकों का कठोर या उपेक्षापूर्ण रवैया छात्रों के प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है। सहपाठियों का प्रभाव इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि सकारात्मक सहकर्मी समूह छात्रों को बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं जबकि नकारात्मक प्रभाव उनके आत्म–सम्मान और शैक्षिक लक्ष्यों को कमजोर कर सकता है।

स्कूल में उपलब्ध संसाधन जैसे पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, खेल के मैदान और तकनीकी उपकरण छात्रों की शैक्षिक सफलता को बढ़ावा देते हैं। पर्याप्त संसाधन छात्रों को व्यावहारिक और अनुभवात्मक शिक्षा प्रदान करने में मदद करते हैं। साथ ही, कक्षाओं का वातावरण, जैसे स्वच्छता, प्रकाश व्यवस्था और बैठने की व्यवस्था, छात्रों की एकाग्रता और सीखने की क्षमता को प्रभावित करती है। स्कूल की प्रशासनिक नीतियां और अनुशासनात्मक उपाय भी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। एक प्रगतिशील और समावेशी प्रशासनिक प्रणाली छात्रों को स्वतंत्रता और सहयोग की भावना प्रदान करती है। साथ ही, परीक्षा प्रणाली, मूल्यांकन के तरीके और पाठ्यक्रम की संरचना भी छात्रों के प्रदर्शन का मार्गदर्शन करती है। स्कूल के माहौल का असर मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। तनाव मुक्त और प्रेरणादायक वातावरण छात्रों को अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसके विपरीत, दबाव और असुरक्षा का माहौल छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रभावित कर सकता है। अंततः, छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर स्कूल के माहौल का प्रभाव व्यापक और बहुआयामी होता है। यह आवश्यक है कि स्कूल ऐसा वातावरण प्रदान करें जो न केवल शैक्षणिक सफलता को प्रोत्साहित करे बल्कि छात्रों के समग्र विकास में भी मदद करे। इसके लिए शिक्षकों, अभिभावकों और प्रशासन को मिलकर सकारात्मक और उत्साहवर्धक माहौल बनाना चाहिए।

अंततः यह स्पष्ट है कि विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह वातावरण सिर्फ कक्षाओं तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि इसमें शिक्षक सहपाठी भौतिक सुविधाएँ सहायक गतिविधियाँ और माता–पिता का सहयोग भी शामिल होता है। जब इन सभी घटकों का संतुलित रूप से ध्यान रखा जाता है तो छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों में लगातार सुधार देखा जाता है। इसलिए विद्यालयों को इस वातावरण को सकारात्मक प्रेरणादायक और सहयोगपूर्ण बनाने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए ताकि विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता सुनिश्चित की जा सकें।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में प्रतिस्पर्धा, तकनीकी परिवर्तन तथा सामाजिक दबाव के कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो रही है। यदि विद्यालयी वातावरण अनुकूल न हो तो विद्यार्थियों में तनाव, अरुचि एवं असफलता की भावना उत्पन्न हो सकती है। अतः यह आवश्यक है कि विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाए, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सके। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन शैक्षिक अनुसंधान और नीति निर्माण के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्यालयी वातावरण से अभिप्राय केवल विद्यालय के भौतिक ढांचे शैक्षिक संसाधनों और शिक्षा प्रक्रिया से नहीं है बल्कि इसमें सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक पहलू भी शामिल हैं जो विद्यार्थियों की समग्र शैक्षिक यात्रा को प्रभावित करते हैं। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का शैक्षिक विकास केवल पाठ्यक्रम और शिक्षक की पढ़ाई पर निर्भर नहीं करता बल्कि यह उनके आस–पास के वातावरण से भी प्रभावित होता है। इस वातावरण में विद्यालय का शैक्षिक माहौल सहशिक्षा विद्यालय प्रशासन सहकर्मी सम्बन्ध माता–पिता का सहयोग और विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य शामिल हैं।

विद्यालय का शैक्षिक माहौल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सीधे प्रभाव डालता है। यदि विद्यालय में प्रतिस्पर्धात्मक प्रेरणादायक और सहायक वातावरण होता है तो विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता बढ़ती है। एक अच्छा शैक्षिक माहौल विद्यार्थियों को न केवल उच्चतर अकादमिक उपलब्धियाँ हासिल करने के लिए प्रेरित करता है बल्कि उनका आत्मविश्वास भी बढ़ाता है। इसके विपरीत एक नकारात्मक और तनावपूर्ण वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है और उनकी शैक्षिक उपलब्धियों में कमी ला सकता है। विद्यालय के भीतर सहशिक्षा का माहौल विद्यार्थियों की सामाजिक क्षमताओं को निखारता है। जब विद्यार्थियों के बीच आपसी सहयोग और सहकार्य की भावना होती है तो यह शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ावा देता है। सहशिक्षा विद्यार्थियों को सामूहिक कार्यों और परियोजनाओं में भाग लेने का अवसर देती है जिससे वे नए दृष्टिकोण अपनाने और समस्याओं को हल करने की कला सीखते हैं। इसके अलावा सहकर्मी रिश्ते विद्यार्थियों को भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं जिससे उनकी शैक्षिक यात्रा अधिक सुखद और संतुलित होती है। विद्यालय प्रशासन की भूमिका भी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण होती है। एक कुशल और प्रेरणादायक प्रशासन शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उचित संसाधनों और नीतियों की स्थापना करता है। इसके साथ ही शिक्षक का दृष्टिकोण और कार्यशैली भी विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता पर बड़ा असर डालते हैं। प्रेरित और समर्थ शिक्षक विद्यार्थियों को अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान करते हैं। वे विद्यार्थियों के व्यक्तिगत और शैक्षिक विकास के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है जिससे छात्रों में अपनी क्षमता पर विश्वास उत्पन्न होता है। विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक स्थिति पर भी प्रभाव डालता है। एक सकारात्मक और सहायक वातावरण विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान को बढ़ाता हैं और उन्हें शैक्षिक सफलता प्राप्त करने में सहायता करता है। वहीं यदि विद्यालय का वातावरण मानसिक तनाव दबाव और प्रतिस्पर्धा से भरपूर होता है तो यह विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक असर डाल सकता है। इसलिए विद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों और भावनात्मक समर्थन की व्यवस्था विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक है। विद्यालयी वातावरण में माता–पिता का सहयोग भी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब माता–पिता का सक्रिय सहयोग और समर्थन होता है तो विद्यार्थियों को अपने लक्ष्यों के प्रति अधिक प्रतिबद्धता होती है। माता–पिता के सकारात्मक प्रभाव से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है और वे विद्यालय के वातावरण में बेहतर तरीके से समायोजित होते हैं। इसके अतिरिक्त माता–पिता द्वारा दिए गए प्रेरणा और दिशा–निर्देश विद्यार्थियों को मानसिक और शैक्षिक चुनौतियों का सामना करने में मदद करते हैं। विद्यालय में उपलब्ध शैक्षिक

संसाधन और सुविधायें भी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर असर डालती हैं। जब विद्यालय में पर्याप्त पुस्तकालय कंप्यूटर प्रयोगशाला और अन्य संसाधन उपलब्ध होते हैं तो विद्यार्थियों को सीखने के लिए बेहतर अवसर मिलते हैं। इसके अलावा खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है जो उनकी शैक्षिक उपलब्धियों में भी योगदान करता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर एक व्यापक और गहरा प्रभाव डालता है। विद्यालय का शैक्षिक माहौल सहशिक्षा शिक्षक का दृष्टिकोण प्रशासन की नीतियाँ मानसिक स्वास्थ्य और माता–पिता का सहयोग सभी मिलकर विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन को आकार देते हैं। इस कारण विद्यालयों को एक सकारात्मक और सहायक वातावरण तैयार करने की आवश्यकता है जिसमें विद्यार्थियों के शैक्षिक सामाजिक और मानसिक विकास की पूर्णता सुनिश्चित की जा सकें। यह अध्ययन शैक्षिक नीतियों के सुधार और विद्यालयों की कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है ताकि विद्यार्थियों को उनकी पूरी शैक्षिक क्षमता को पहचानने और उसे साकार करने के अवसर मिल सकें।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

माध्यमिक स्तर पर विद्यालयी वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव

Savita & Bindu Singh (2024) ने अध्ययन किया कि विद्यालयी वातावरण के तत्व जैसे शिक्षकदृछात्र संबंध, सहपाठी प्रभाव, शैक्षणिक संसाधन और प्रशासनिक नीतियाँ छात्रों की सीखने की क्षमता और शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करती हैं। शोध में पाया गया कि सकारात्मक और सहयोगी वातावरण विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाता है जबकि कठोर या उपेक्षात्मक माहौल प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है।

स्कूल वातावरण, भावनात्मक स्वास्थ्य और उपलब्धि पर प्रभाव

भारत और अन्य देशों में हुए एक Systematic Review के अनुसार स्कूल क्लाइमेट या माहौल सकारात्मक होने पर विद्यार्थियों का आत्म–सम्मान, भावनात्मक स्वास्थ्य और अकादमिक उपलब्धि बढ़ती है। विपरीत में, असमर्थ, तनावपूर्ण या नकारात्मक वातावरण से सीखने की प्रक्रिया और शैक्षिक परिणाम प्रभावित होते हैं।

अध्यापक–छात्र संबंध और संसाधनों के प्रभाव

अन्य अध्ययनों में यह पाया गया कि शिक्षक–विद्यार्थी का सकारात्मक संबंध, पर्याप्त संसाधन (जैसे पुस्तकालय, प्रयोगशाला) तथा सुविधा–सम्पन्न वातावरण विद्यार्थियों में सीखने के प्रति रुचि, आत्म–विश्वास और बेहतर प्रदर्शन को प्रोत्साहित करते हैं। विद्यार्थियों की धारणा भी इस बात को बताती है कि अच्छे विद्यालय संसाधन जैसे पुस्तकालय और अतिरिक्त–पाठ्यक्रम सुविधाएँ उनकी उपलब्धि में सकारात्मक भूमिका निभाती हैं।

भौतिक वातावरण का प्रभाव

अंतरराष्ट्रीय साहित्य समीक्षा में पाया गया है कि भौतिक संरचना कृ जैसे इमारत की स्थिति, कक्षा का आकार, प्राकृतिक प्रकाश, स्वच्छता कृ का छात्रों की सीखने की क्षमता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। बेहतर इन्फ्रास्ट्रक्चर वाले विद्यालयों के छात्रों का प्रदर्शन तुलनात्मक रूप से बेहतर पाया गया है।

मानसिक स्वास्थ्य और समायोजन की भूमिका

शोधों ने यह भी दर्शाया कि विद्यालयी वातावरण के साथ छात्र का समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक सम्बन्ध सीधे तौर पर शैक्षिक उपलब्धि से जुड़े हैं। समायोजन समस्याएँ तथा तनाव जैसे कारक जब विद्यालय के वातावरण से असंगत होते हैं, तब छात्रों की उपलब्धि प्रभावित होती है।

अध्ययन आदतें और पारिवारिक/सामाजिक कारक

हालाँकि विशेष रूप से विद्यालयी वातावरण पर केंद्रित नहीं, कुछ शोधों में पाया गया कि अभिभावकों की शैक्षिक योग्यता और अध्ययन–आदतें भी विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करती हैं, जो अंततः स्कूल–मूल्यांकन, विद्यालयी वातावरण और उपलब्ध संसाधनों के साथ इंटरैक्ट करती हैं।**सकारात्मक वातावरण का प्रभाव –** सकारात्मक और सहायक विद्यालयी वातावरण (जिसमें भौतिक सुविधाएं, शिक्षक–छात्र संबंध और अनुशासन शामिल हैं) सीधे तौर पर अकादमिक प्रदर्शन में सुधार से जुड़ा हुआ है।

भौतिक संसाधन – पर्याप्त संसाधनों वाले स्कूल (जैसे– प्रयोगशाला, पुस्तकालय, कंप्यूटर) छात्रों की सीखने की प्रक्रिया और शैक्षिक उपलब्धियों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक प्रभाव – तनावमुक्त और प्रेरणादायक वातावरण छात्रों को अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जबकि दबाव का माहौल प्रदर्शन को कम करता है।

अनुशासनात्मक व्यवहार – कक्षाओं का माहौल, स्वच्छता, रोशनी, और बैठने की सुविधा छात्रों की एकाग्रता और सीखने की क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है।

शिक्षक–छात्र संबंध – सहायक और सकारात्मक शिक्षक–छात्र संबंध शैक्षिक गतिविधियों के सुचारू रूप से चलने में मदद करते हैं, जिससे अच्छा शैक्षणिक परिणाम मिलता है।

शोध के प्रमुख पहलू

विद्यालय का परिवेश – साफ–सफाई, बैठने की सुविधा और कक्षा का माहौल।

अनुशासनात्मक नीतियां – अनुशासनात्मक उपाय जो छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

शिक्षक की भूमिका–शिक्षण पद्धति और छात्रों के साथ संबंध।

निष्कर्ष

अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यालयी वातावरण का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। सकारात्मक वातावरण विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित करता है तथा उनकी उपलब्धि में वृद्धि करता है। माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के अध्यापन में केवल पारंपरिक शिक्षण तकनीकों पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। यदि पारंपरिक एवं नवीन शिक्षण तकनीकों का संतुलित एवं समन्वित प्रयोग किया जाए तो छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के साथ–साथ उनकी रचनात्मकता का भी समुचित विकास संभव है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर.ए. (2018). शिक्षा में नवीन प्रवृत्तियाँ. आगरारू अग्रवाल पब्लिकेशन।
2. कुमार, एस. (2020). शिक्षण विधियाँ एवं तकनीकें. नई दिल्लीरू एपीएच पब्लिशिंग।
3. एनसीईआरटी (2021). सामाजिक अध्ययन शिक्षण. नई दिल्ली।
4. कुमार, एस. (2019). शैक्षिक मनोविज्ञान. नई दिल्ली–प्रकाशन संस्थान।
5. शर्मा, आर. (2020). विद्यालयी वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि. जयपुर– शिक्षा प्रकाशन।

.